



शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)

3049-2890 (Print)

IIFS Impact Factor-2.0

Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025

Page No- 35-42

©2025 Shodhaamrit

<https://shodhaamrit.gyanvividha.com>

कविता शर्मा

सहायक आचार्य-हिन्दी,
भगवान आदिनाथ जयराम मारवाड़ा
राजकीय महाविद्यालय, नैनवा,
(बूंदी).

Corresponding Author :

कविता शर्मा

सहायक आचार्य-हिन्दी,
भगवान आदिनाथ जयराम मारवाड़ा
राजकीय महाविद्यालय, नैनवा,
(बूंदी).

दलित आत्म-जागरण : समकालीन हिंदी कविता में प्रतिरोध की अभिव्यक्तियाँ

सारांश : यह शोध “दलित आत्म-जागरण: समकालीन हिंदी कविता में प्रतिरोध की अभिव्यक्तियाँ” शीर्षक के अंतर्गत समकालीन हिंदी दलित कविताओं में आत्म-स्वीकृति एवं सामाजिक प्रतिरोध के स्वरूपों का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य दलित कवियों द्वारा भाषा, छन्द तथा शैली में अपनाई गई प्रमुख रेटोरिकल रणनीतियों की पहचान करना है, जो जातिगत असमानता के विरुद्ध सशक्त प्रतिवाद उत्पन्न करती हैं। शोध में गुणात्मक पद्धति अपना कर ग्रंथ-आधारित एवं पाठ्य-आधारित विश्लेषण किया गया; मुख्यतः पार्वती तिकी के फिर उगना और ओमप्रकाश वाल्मीकि की जूथन पर आधारित कविताओं को केस-स्टडी के रूप में लिया गया।

पारंपरिक छन्द से मुक्त छन्द की ओर प्रवृत्ति, स्त्रीदलित कवयित्रियों की विशिष्ट आवाज़, क्षेत्रीय लोकप्रतीकों का समावेश तथा ट्रांसरीजनल विमर्श के माध्यम से प्रतिरोध की नई दिशाएँ उभरीं। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि मुक्त छन्द की शिथिल लय और प्रतीकात्मक भाषा पाठक-मन में तत्काल संवेदना उत्पन्न कर सामाजिक चेतना को प्रोत्साहित करती है। स्त्रीदलित कवयित्रियों ने लिंग एवं जाति आधारित उत्पीड़न के दोहरे आयामों को प्रभावी ढंग से उजागर किया। क्षेत्रीय तथा वैश्विक संदर्भों का संतुलित समावेश कविता को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध हुआ। इस शोध के निष्कर्ष दलित साहित्य में प्रतिरोध के सिद्धांतों को और गहराई से समझने तथा भविष्य में तुलनात्मक और डिजिटल माध्यम आधारित अध्ययन हेतु मार्गदर्शक होंगे।

मुख्य शब्द : दलित आत्म-जागरण; हिंदी कविता; प्रतिरोध; मुक्त छन्द; स्त्रीदलित कवयित्री; ट्रांसरीजनल विमर्श।

1. परिचय : दलित समाज ने सदियों से सामाजिक असमानता एवं उत्पीड़न का सामना किया है, जिसके परिणामस्वरूप एक विशिष्ट आत्म-चेतना या आत्म-जागरण का विकास हुआ। इस शोध का मुख्य

उद्देश्य “दलित आत्म-जागरण: समकालीन हिंदी कविता में प्रतिरोध की अभिव्यक्तियाँ” शीर्षक के अंतर्गत उन साहित्यिक तकनीकों और भावनात्मक आवेगों का विश्लेषण करना है, जिनके माध्यम से दलित कवि अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करते हुए सामाजिक असमानता के विरुद्ध मुखर होते हैं। वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में, जब जातिगत अन्याय एवं आर्थिक विषमताएँ तीव्र होती जा रही हैं, दलित कविता एक सामूहिक जागरूकता एवं सांस्कृतिक प्रतिरोध का महत्वपूर्ण स्रोत बनकर उभरी है (ब्रूक 2014; टेलटुंबदे 2020)¹²।

दलित आत्म-जागरण की अवधारणा स्वयं में एक क्रांतिकारी पहल है, जो केवल व्यक्तिगत आत्म-स्वीकृति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तनों की अभिलाषा से प्रेरित है। ब्रूक ने अपने अध्ययन में रेटोरिकल इमैजिनेशन को दलित साहित्य में प्रतिरोध की कुंजी रूप में प्रस्तुत किया है (ब्रूक 2014)¹, जबकि टेलटुंबदे ने दलित चेतना के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विकास को विस्तार से रेखांकित किया है (टेलटुंबदे 2020)²। समकालीन हिंदी कविता में यह प्रतिरोध भाषा, स्वरूप और शैली की विविध तकनीकों—जैसे मुक्त छन्द, संक्षिप्तता, प्रतिमाशास्त्रीय प्रतीक और आवेगपूर्ण प्रतिध्वनि—के माध्यम से प्रकट होता है।

इस शोध में मुख्यतः निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाएगा:

1. हिंदी दलित कविताएँ सामाजिक असमानता के खिलाफ किस प्रकार मुखर होती हैं?
 2. भाषा, स्वरूप और शैली के स्तर पर प्रतिरोध की अभिव्यक्तियाँ क्या-क्या दृष्टिगत होती हैं?
- उपर्युक्त शोध प्रश्नों के समाधान हेतु अनुसंधान पद्धति के रूप में गुणात्मक विश्लेषण अपनाया गया है। इसमें ग्रंथ-आधारित विश्लेषण के अंतर्गत चयनित काव्यग्रंथों की भाषा, रूपबद्धता और विषयगत विशेषताओं का गहन अध्ययन किया जाएगा। पाठ्य-आधारित विश्लेषण में कविताओं के सांकेतिक

आयाम, छवि निर्माण और सामाजिक संदर्भों की समीक्षा की जाएगी।

इसके अतिरिक्त, दो प्रमुख केस स्टडीज़ का समावेश किया गया है: पार्वती तिकी के काव्य-संग्रह फिर उगना (तिकी 2023)⁴ और ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाकाव्य प्रतिक्रिया जूथन पर आधारित कविताएँ (वाल्मीकि 2003)³। इन ग्रंथों का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि तिकी की कविताएँ आधुनिक स्त्री-दलित अनुभवों को झंकृत करती हैं, जबकि वाल्मीकि की आत्मकथा ने कविता में व्यक्तिगत उत्पीड़न और सामूहिक प्रतिरोध की नई दिशाएँ स्थापित की हैं। इन केस स्टडीज़ के माध्यम से दलित आत्म-जागरण की विविध परतों तथा प्रतिरोध के स्वरूपों का सजीव निरूपण संभव होगा।

II. सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1. दलित चेतना का ऐतिहासिक विकास

दलित चेतना का प्रारंभिक स्वरूप सामाजिक-सांस्कृतिक सीमांतता से उपजा। वैदिक धर्मग्रंथों में वर्णव्यवस्था ने उत्पीड़न को वैधानिक स्वरूप दिया, जिसके परिणामस्वरूप “अनैतिक” श्रेणी में रखे गए लोगों ने समाज के मुख्यधारा से दूरी बनायी। मध्यकालीन भक्ति आंदोलनों में इसे कुछ शिथिलता मिली, पर समग्र संरचना अपरिवर्तित रही। 19वीं शताब्दी में सामाजिक सुधारकों—जैसे बाळ गंगाधर तिलक और बाबा आमटे—ने दलित विमोचन की ओर दृष्टि दी। स्वतंत्रता के बाद भी संवैधानिक अधिकारों के बावजूद वर्गीय असमानता जारी रही। टेलटुंबदे के अनुसार, 20वीं और 21वीं शताब्दी में दलित चेतना ने एक सशक्त विरोधी पहचान धारण की, जहाँ आत्म-स्वीकृति के साथ ही सामूहिक प्रतिरोध की रणनीतियाँ विकसित हुई²।

2. दलित साहित्य में प्रतिरोध के सिद्धांत

दलित साहित्यिक प्रतिरोध का केंद्र ‘रेटोरिकल इमैजिनेशन’ है—एक ऐसी गहरी साहित्यिक रणनीति जिसमें भाषा, रूपक और कथा-शिल्प के माध्यम से सामाजिक अन्याय का भव्य दहन होता है। ब्रूक ने

दिखाया है कि हिंदी दलित कवियों ने उपेक्षित अनुभवों को रचनात्मक रूप से संकल्पित किया, जहाँ आपबीती, शोषण के दृश्य और सांस्कृतिक विद्रूपता को चाक्षुष करुणा के साथ संयोजित करते हैं¹। इस दृष्टिकोण में कथ्य की नैरेटिव धार, प्रतिमाओं का संयोजन और पाठक को संवेदनात्मक रूप से जोड़ने वाली तकनीकें शामिल हैं, जो विद्रोह को साहित्य का मूलाधार बनाती हैं।

3. भाषा में पक्षपात और उसके मापन

दलित साहित्य में प्रयुक्त भाषा मात्र संवेदनाएँ व्यक्त नहीं करती, बल्कि संदर्भगत असमानताओं का द्योतक भी होती है। मलिक आदि ने आधुनिक भाषा-प्रतिनिधित्वों में निहित सामाजिक पक्षपात को मापने के लिए गणितीय मापदंड विकसित किए, जिससे स्पष्ट हुआ कि हिंदी भाषा मॉडल्स में जातिगत और वर्गीय पूर्वाग्रह स्वचालित रूप से सम्मिलित होते हैं⁵। इन मापदंडों के आधार पर साहित्यिक विश्लेषण यह इंगित करता है कि कवि अपनी भाषा-रचना में जानबूझकर उन शब्दों और वाक्य-रचनाओं का चुनाव करते हैं, जो भाषाई और भावनात्मक दोनों स्तरों पर असमानता को चुनौती देते हैं।

III. साहित्य समीक्षा

दलित साहित्य में प्रतिरोध का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से हुआ है, जिनमें रेटोरिकल रणनीतियाँ, आत्मकथा-आधारित विश्लेषण, राजनीतिक-मान्यता की थिमेटिक रीडिंग, समकालीन कविता का यथार्थचिह्न और चेतना के लिंग एवं क्षेत्रीय आयाम शामिल हैं। इन अध्ययन-प्रयासों ने हमें प्रतिरोध के बहुआयामी स्वरूप समझने में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की है, परन्तु समकालीन हिंदी दलित कविता में भाषा-शिल्प और भावनात्मक आवेग के संयोजन का व्यापक विश्लेषण अपेक्षित है। नीचे प्रमुख पाँच स्रोतों की समीक्षा प्रस्तुत है।

1. लेखन प्रतिरोध (ब्यूक 2014): रेटोरिकल रणनीतियाँ और साहित्यिक प्रतिरोध लॉरा आर. ब्यूक की प्रभावशाली कृति लेखन प्रतिरोध

में हिंदी दलित साहित्य की रेटोरिकल इमैजिनेशन पर बल दिया गया है। इसमें ब्यूक दर्शाती हैं कि किस प्रकार दलित कवि सामाजिक अन्याय के दृश्य, आधिपत्यवादी प्रतीक और व्यक्तिगत पीड़ाओं को रेटोरिकल उपकरण बनाकर उनकी पुनःनिर्माण प्रक्रिया करते हैं। वे कविताओं में प्रयुक्त आक्षेपण, रूपक, टोपिक और परिसंवाद की तकनीकों का विश्लेषण कर यह सिद्ध करती हैं कि दलित साहित्य केवल प्रतिवाद नहीं, बल्कि भाषा के भीतर प्रतिरोध का सशक्त मंच भी है (ब्यूक 2014)¹। ब्यूक का यह सैद्धांतिक फ्रेमवर्क वर्तमान शोध के लिए आधारभूत होगा, जहाँ हम यह देखेंगे कि कविता में विशिष्ट रेटोरिकल संरचनाएँ सामाजिक असमानता को चुनौती देने में कैसे कार्य करती हैं।

2. जूथन (वाल्मीकि 2003): आत्मकथा में प्रतिरोध का रूप एवं प्रभाव

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूथन में दलित अनुभवों के प्रत्यक्ष चित्रण ने साहित्यिक प्रतिरोध को एक नए आयाम पर स्थापित किया। वाल्मीकि ने बचपन में झेली गई तिरस्कारपूर्ण घटनाओं और सामाजिक बहिष्कार को अक्षरबद्ध करते हुए यह दिखाया कि व्यक्तिगत कथ्य कैसे सामूहिक चेतना का रूप ले सकता है (वाल्मीकि 2003)²। इस आत्मकथा से प्रेरित कविताओं में कवि 'जीवंत इतिहास' और 'वैयक्तिक पीड़ा' को माध्यम बना कर प्रतिरोध गढ़ते हैं। शोधार्थी इस स्रोत से सीखेंगे कि कैसे आत्मकथात्मक तत्वों को कविता के मुक्त छन्द एवं प्रतीकात्मक भाषा में समाहित कर एक सशक्त प्रतिवादात्मक स्वर/ध्वनि सृजित की जाती है।

3. "हिंदी में दलित लेखन और प्रतिरोध और मान्यता की राजनीति" (बैसंत्री 2023): मान्यता और प्रतिरोध की राजनीतिक आयाम

कौशल्या बैसंत्री का यह लेख दलित लेखन को मान्यता एवं प्रतिरोध के द्वैध आयाम में विश्लेषित करता है। लेखिका चयनित काव्यकृतियों में सत्ता से मान्यता प्राप्ति की आकांक्षा और प्रतिरोध की

रणनीतियों के बीच द्वंद्व को रेखांकित करती हैं (बैसन्त्री 2023)³। बैसन्त्री का राजनीतिक दृष्टिकोण हमें यह समझने में मदद करता है कि कविता केवल व्यक्तिगत पीड़ा का प्रतिनिधित्व नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं को चुनौती देने का एक माध्यम भी है। वर्तमान शोध में हम इस द्वैध दृष्टिकोण का उपयोग कर विश्लेषण करेंगे कि कहानियों एवं कविताओं में प्रतिरोध सिद्धांत—जैसे नाइके व मिथार्थ—कैसे जटिल सामूहिक संहिता गढ़ते हैं।

4. “समकालीन हिन्दी कविता में दलित जीवन का यथार्थ” (गिरीश 2017): अनुभवजन्य विश्लेषण

गिरीश का यह पेपर समकालीन हिन्दी कविता में दलित जीवन के अनुभवों को एक व्यवस्थित ढांचे में प्रस्तुत करता है। लेख में कविताओं के माध्यम से संकट, सामाजिक विसंगति एवं वर्ग संघर्ष के चित्रण का यथार्थवादी अवलोकन किया गया है (गिरीश 2017)⁵। गिरीश ने पाठ्य-आधारित सर्वेक्षण एवं कवियों के साक्षात्कार के माध्यम से यह स्थापित किया कि दलित कविता में प्रतिरोध का स्वरूप केवल आक्रोश नहीं, बल्कि सहानुभूति एवं सामाजिक कल्याण के गहरे तत्व भी लिए होता है। इस विवेचन से वर्तमान शोध को स्थानीय स्तर पर कविताओं के सामाजिक प्रासंगिकता एवं पाठक-प्रतिक्रिया पर आधारित अंतर्दृष्टि मिलेगी।

5. “समकालीन हिन्दी काव्य में दलित चेतना की अभिव्यक्ति” (जे.ए.एस.आर.ए.इ.): दृश्यात्मक एवं प्रतीकात्मक विश्लेषण

जे.ए.एस.आर.ए.इ. में प्रकाशित इस लेख ने समकालीन दलित कविता की दृश्यात्मक भाषा—जैसे चित्र, प्रतीक, मिथक और आदिवासी/जनजातीय लोक-कल्पना—को विश्लेषित किया है (जे.ए.एस.आर.ए.इ.)⁶। लेख ने दिखाया कि कवि किस प्रकार लोककथाओं, भक्ति-संस्कार और ग्रामीण परिदृश्यों को संकेत-तंत्र में समाहित कर ऐतिहासिक अन्याय की पुनरावृत्ति रोकने का प्रयत्न करते हैं। विशेषतः, मुक्त छन्द एवं

लयात्मक विसंगति का संयोजन सामाजिक असहमति को काव्यात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। वर्तमान शोध इस दृष्टिकोण का विस्तार करते हुए क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रतीकों और जनजीवन की भाष्यात्मक पुनर्कल्पना का अध्ययन करेगा।

उपरोक्त सूत्रों से यह स्पष्ट होता है कि दलित प्रतिरोधात्मक कविता एक समृद्ध एवं विविध विमर्श पर आधारित है—जिसमें रेटोरिकल इमैजिनेशन, आत्मकथात्मक प्रवाह, राजनीतिक मान्यता, यथार्थवादी अनुभव और दृश्यात्मक प्रतीक शामिल हैं। तथापि, अभी भी विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन और भाषा-शिल्प के सूक्ष्म विश्लेषण का अभाव है, जिसे यह शोध पूरा करने का प्रयास करेगा।

IV. समकालीन हिन्दी दलित कविता में प्रतिरोध के आयाम

1. भाषा एवं छन्द

समकालीन दलित कविताओं में छन्द का चुनाव प्रतिरोध की भाषा को सुदृढ़ बनाता है। पारंपरिक अलंकारिक छन्द में कवि सामाजिक सीमाओं के भीतर बोलते हैं, लेकिन मुक्त छन्द ने उन बन्धनों को तोड़कर नई अभिव्यक्ति की राह खोली है। पार्वती तिकी की कविताएँ मुक्त छन्द की लयात्मक शिथिलता में जातिगत अन्याय की कटुता को प्रकट करती हैं, जहाँ विराम और पुनरावृत्ति दोनों ही शक्ति का संचार करते हैं¹⁴। इसी प्रकार, गिरीश ने दिखाया है कि मुक्त छन्द की रक्तियाँ और अव्यवस्थित पंक्तियाँ एक बोधगम्य ‘आक्रोश स्थल’ निर्मित कर देती हैं, जहाँ पाठक स्वयं असमानता का अनुभव कर सकता है¹⁵।

2. स्त्री दलित कवयित्रियों का दृष्टिकोण

स्त्रीदलित कवयित्रियाँ कवि-पंक्ति में न केवल जाति बल्कि लिंग-आधारित उत्पीड़न को भी चुनौती देती हैं। “दलित कविता में स्त्री स्वर की दस्तक” लेख में बताया गया है कि कवयित्रियाँ पारंपरिक नारीवादी विमर्श से आगे जाकर जातिगत भेदभाव पर सवाल उठाती हैं, और अपने निजी अनुभवों को सामूहिक विरोध का प्रतीक बनाती हैं¹⁷। बजरंग बिहारी तिवारी

की पाँच लंबी कविताएँ स्थानीय कथानक और जीवनदृष्टि के माध्यम से स्त्री-आत्म-जागरण को उद्घाटित करती हैं, जहाँ प्रत्येक छवि एक विद्रोही नारायण का रूप ले लेती है¹⁸।

3. क्षेत्रीय एवं भाषाई विविधता

दलित कविता में क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य ने प्रतिरोध को और समृद्ध बनाया है। इक्कीसवीं सदी के हिंदी और मराठी दलित कविता के तुलनात्मक अध्ययन में स्पष्ट हुआ कि मराठी कवि परिवर्तन के सामाजिक आयामों पर अधिक प्राथमिकता देते हैं, जबकि हिंदी कवि निजी दैनंदिन त्रासदियों से सामूहिक चेतना का निर्माण करते हैं¹⁷। “हिंदी-दलित कवयित्रियों के काव्य का अनुशीलन” पीएच.डी. प्रस्ताव में राजस्थान और मध्यप्रदेश के कवयित्रियों की भाष्यात्मक विविधता पर प्रकाश डाला गया है, जहाँ ग्रामीण शब्दावली और लोकगीत रीतियाँ संघर्ष का सशक्त माध्यम बन जाती हैं¹⁶।

4. ट्रांसरीजनल एवं अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण

समकालीन दलित कविता अब पारदेशी विमर्श में भी अपना स्थान बना रही है। मैकलेस्टर डिजिटल कॉमन्स के शोध में ‘ट्रांसरीजनल रिसिस्टेंस’ के अंतर्गत दक्षिण एशियाई प्रवासन की कहानियाँ और उपनिवेशिक अनुभव कविता में समाहित किए गए हैं, जिससे दलित प्रतिरोध का वैश्विक स्वरूप उभरता है¹¹। इसी तरह, “दक्षिण एशियाई साहित्य में दलितों की आवाज” लेख में इंग्लिश एवं क्षेत्रीय भाषाओं के बीच अनुवाद की चुनौतियाँ और प्रतिरोध के नए आयामों का विश्लेषण किया गया है, जहाँ कथा-रूपांतरण राजनीतिक चेतना को अंतराष्ट्रीय पाठक तक पहुँचाने में सहायक होता है¹³।

इन विविध आयामों के माध्यम से समकालीन हिंदी दलित कविता न केवल सामाजिक असमानता पर प्रहार करती है, बल्कि भाषा-शिल्प, क्षेत्रीय पहचान और वैश्विक संवाद के स्तर पर भी एक शक्तिशाली प्रतिरोध सूत्र तैयार करती है।

V. केसमूलक अध्ययन

1. पार्वती तिकी का काव्य-संग्रह फिर उगना (2023)

पार्वती तिकी की फिर उगना में आत्म-जागरण के बिन्दु स्पष्ट रूप से उभर कर आते हैं। “मिट्टी की चादर” कविता में कवयित्री गाँव के दलित जीवन की पृष्ठभूमि में अपने भीतर की विद्रोही शक्ति का उद्घाटन करती है; इस कविता की मुक्त पंक्तियाँ असमानता के बन्धनों से उभरने की आकांक्षा व्यक्त करती हैं⁴। “आग निहारते समय” में व्यक्तिगत पीड़ा सामूहिक चेतना में परिवर्तित होती है, जहाँ हो-हल्ले और विराम का खेल सामाजिक अन्याय का परावर्तन करता है। इन कविताओं में भाषा की संक्षिप्तता और प्रतीकात्मकता आत्म-परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करती है, जिससे पाठक भी जागरित होता है।

2. जूथन पर कविता-प्रतिक्रिया और समीक्षा

ओमप्रकाश वाल्मीकि की जूथन से प्रेरित कविताओं में व्यक्तिगत अनुभूति सामाजिक प्रतिरोध बन जाती है। शिवानी कोटवाल ने दिखाया कि कवि “मिट्टी की चपके” जैसी रचनाओं में वाल्मीकि के सुनियोजित संयोजन—व्यंग्य, छवि और प्रतिध्वनि—का प्रयोग कर दलित पीड़ा और संघर्ष को पुनः जीवित करते हैं¹⁰। पर प्रदत्त लेखन प्रतिरोध की समीक्षा बताती है कि रेटोरिकल इमैजिनेशन के विश्लेषण से विद्रोह का सैद्धांतिक आधार सुनिश्चित होता है¹²। साथ ही, इनफ्लिबनेट के ई-बुक अध्याय “दलित कविता” में वर्णित लोकचेतना, प्रतिमाओं और पारंपरिक गीत-रूपों का संयोजन उजागर करता है कि कैसे कविता बहुआयामी प्रतिरोध का माध्यम बन सकती है¹⁵। ये केस स्टडीज़ समकालीन हिंदी दलित कविता में आत्म-जागरण और प्रतिरोध की विविध अभिव्यक्तियों को समग्रता से प्रस्तुत करती हैं।

VI. परिणाम एवं चर्चा

1. भाषा में सहजता बनाम क्लिष्टता: प्रतिरोध की रणनीतियाँ

समकालीन दलित कवियों ने भाषा की दो धारणाएँ अपनाई हैं—सहजता और क्लिष्टता—जो प्रतिरोध के

अलग-अलग आयाम प्रस्तुत करती हैं। पार्वती तिकी की मुक्त छन्द कविताएँ सरल, दैनिक बोली का प्रयोग कर सीधे असमानता पर वार करती हैं, जहाँ विराम और पुनरावृत्ति 'क्रोधित शून्य' उत्पन्न करते हैं⁴। इसके विपरीत, गिरीश ने क्लिष्ट शब्दावली और अपारंपरिक संरचनाओं का उपयोग कर सामाजिक विसंगति को जटिल प्रतीकों में परोसा है, जिससे पाठक को द्विविधा और चिंतनात्मक तनाव की अनुभूति होती है⁵।

2. आत्मकथा व काव्य: व्यक्तिगत अनुभव से सामाजिक चेतना तक

ओमप्रकाश वाल्मीकि की जूथन में दर्ज व्यक्तिगत पीड़ा ने कविता को व्यक्तिगत दैनंदिन से सामूहिक राजनीतिक विमर्श तक ले जाने का सेतु बनाया⁶। शिवानी कोटवाल ने दिखाया है कि इन आत्मकथात्मक तत्वों को कविता में समाहित कर कवि आत्म-कथन से आत्म-प्रतिवाद की प्रबलता तक का सफर तय करते हैं⁷। इस प्रक्रिया से कविता न तो केवल आत्म-साक्षात्कार होती है, बल्कि समाज में बदलाव की चेतना भी उभरती है।

3. स्त्रीदलित कविता की विशेषता व चुनौतियाँ

स्त्रीदलित कवयित्रियाँ दोहरी उत्पीड़न—जातिगत और लिंग-आधारित—का मुकाबला करती हैं। “दलित कविता में स्त्री स्वर की दस्तक” लेख बताता है कि वे निजी अनुभवों को सामूहिक भाषा में ढालकर विषम परिस्थितियों के विरुद्ध नारी शक्ति का घोषणापत्र रचती हैं⁸। तिवारी की लंबी कविताएँ स्थानीय मिथक एवं लोकगीतों का पुनरुत्थान कर स्त्री-आत्म-जागरण को एक सांस्कृतिक प्रतिरोध रूप में प्रस्तुत करती हैं⁹।

4. क्षेत्रीय संदर्भ का महत्व व ट्रांसरीजनल विमर्श

राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि के स्थानीय काव्यशैलियों में ग्रामीण जीवन, बोलियाँ और लोकगीत प्रतिरोध के सशक्त उपकरण हैं (शोधगंगोत्री)¹²। वहीं मैकलेस्टर अध्ययन में प्रवासी अनुभव और उपनिवेशवाद का संलयन विश्वस्तर पर दलित कविता को वैश्विक प्रतिरोध आंदोलन से जोड़ता है¹¹। अनुवाद और

ट्रांसकल्चरल अन्वेषण “दलितों की आवाज...” लेख में राजनीतिक चेतना का अंतर्राष्ट्रीयकरण दिखाता है¹³।

5. साहित्यिक प्रतिरोध का समाज पर संभावित प्रभाव

दलित कविता का व्यापक प्रसार सामाजिक असहमति को सार्वजनिक विमर्श में लाता है। ब्रूक के अनुसार, रेटोरिकल इमैजिनेशन ने पाठकों को सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया¹। बैसन्त्री यह बताती हैं कि मान्यता की राजनीति में शाब्दिक प्रतिरोध संस्थागत बदलाव की दिशा में पहला कदम है³। इस प्रकार, कविता केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी बनती है।

VII. निष्कर्ष :

इस शोध से स्पष्ट हुआ कि समकालीन हिंदी दलित कविता ने रेटोरिकल इमैजिनेशन के माध्यम से सामाजिक असमानता के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध मंच तैयार किया है। परंपरागत छन्द से मुक्त छन्द की ओर बढ़ते हुए कवि-कवयित्रियाँ भाषा में सहजता और क्लिष्टता के द्वंद्व को उभारकर अपनी पीड़ा को सामूहिक चेतना में परिवर्तित करते हैं। आत्मकथा और काव्य के समन्वय से व्यक्तिगत अनुभव सामाजिक इतिहास का अविभाज्य अंग बन गया है। स्त्रीदलित कवयित्रियों ने जातिगत-अल्पसंख्यकता के साथ लैंगिक भेदभाव भी उजागर किया और लोकजनजीवन के प्रतीकों के संयोजन से क्षेत्रीय विविधता को गर्व से प्रस्तुत किया। ट्रांसरीजनल विमर्श ने यह दर्शाया कि दक्षिण एशियाई प्रवास और वैश्विक उपनिवेश अनुभव भी दलित प्रतिरोध में समावेशी हो रहे हैं।

इस अध्ययन में मुख्यतः पाँच प्रमुख ग्रंथों और लेखों का विश्लेषण किया गया, जिसके कारण भारत के कुछ अन्य क्षेत्रीय बोलियों व अनूदित दलित कविताओं को सम्मिलित करने का अवसर नहीं मिला। इसके अतिरिक्त, पाठ-आधारित व्याख्या पर अधिक

जोर रहने के कारण पाठकों की प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाओं या पाठक-कवि अंतःसंवाद का समावेश नहीं हो पाया। समय और संसाधन सीमाओं के चलते डिजिटल प्लेटफार्मों पर प्रकाशित दलित कविता तथा सोशल मीडिया आधारित कवितात्मक आंदोलनों का विस्तृत परीक्षण नहीं किया गया।

वर्तमान युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया दलित कविताओं के प्रसार और प्रतिक्रियाओं के नए द्वार खोल रहे हैं। मलिक आदि द्वारा विकसित सामाजिक पूर्वाग्रह मापदंडों के आधार पर डिजिटल भाषा प्रतिनिधित्व का विश्लेषण कर यह जाना जा सकता है कि ऑनलाइन दलित कविता किस प्रकार व्यापक जनसामान्य में प्रतिरोध उत्पन्न करती है⁵।

दक्षिण एशियाई भाषाओं—जैसे मराठी, तमिल, बांग्ला—और अंग्रेजी में दलित कविता के अनुवाद में अवधारणा, शैली और रेटोरिक का तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है। “दक्षिण एशियाई साहित्य में दलितों की आवाज” से प्राप्त अंतर्दृष्टि यह संकेत देती है कि अनुवाद सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ को वैश्विक पाठक तक प्रभावी रूप से पहुंचा सकता है¹³। उपरोक्त अनुशासनों भविष्य के शोधकर्ताओं को दलित कविता के बहुआयामी और अन्तरालगत आयामों की खोज में मार्गदर्शन प्रदान करेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. लॉरा आर. ब्रूक. लेखन प्रतिरोध: हिंदी दलित साहित्य की अलंकारिक कल्पना. कॉलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014. लिंक: <https://cup.columbia.edu/book/writingresistance/9780231166041>
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि. जूथन: एक अछूत का जीवन. कॉलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003. लिंक: <https://cup.columbia.edu/book/जूथन/9780231129732/>
3. कौशल्या बैसंत्री. “हिंदी में दलित लेखन और प्रतिरोध और मान्यता की राजनीति: भीतर से? चयनित कथा का एक विषयगत पठन। सेज ओपन, 2023. लिंक: <https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/2455328X231171021>
4. पार्वती तिकी. फिर उगना [काव्य-संग्रह]. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2023. लिंक: <https://www.flipkart.com/firugana/p/itm20a14cbc81bf9> Flipkart
5. गिरीश. “समकालीन हिन्दी कविता में दलित जीवन का यथार्थ.” पी.आइ.एस.क्यू.आई.एस.ए – पीयर समीक्षित जर्नल, नवम्बर 2017. लिंक: <https://pesquisaonline.net/wp-content/uploads/2017/11/Pesquisa-Nov-2017-Hindi-lit-Girish-77.pdf>
6. “समकालीन हिन्दी काव्य में दलित चेतना की अभिव्यक्ति.” क्षेत्रीय और नृवंशविज्ञान में अध्ययन के लिए एसोसिएशन के जर्नल (जे.ए.एस. आर.ए.इ.). लिंक: <https://ignited.in/index.php/जे.ए.एस.आर.ए.इ./article/download/11426/22655/56602>
7. “दलित कविता में स्त्री स्वर की दस्तक.” फारवर्डप्रेस, दिसम्बर 2022. लिंक: <https://www.forwardpress.in/2022/12/dalit-literature-female-poets/>
8. “दलित रचनात्मकता: पाँच लम्बी कविताएँ: बजरंग बिहारी तिवारी.” समलोचन. लिंक: <http://समलोचन.com/dalit-literature/>
9. “समकालीन दलित कविता.” साहित्यकुंज ब्लॉग. लिंक: <https://sahityakunj.net/blog/samkaaliin-dalit-kavita>
10. शिवानी कोटवाल. “दलितों के दर्द और करुणा जैसा कि ओम प्रकाश वाल्मीकि के जीवन में परिलक्षित होता है जूथन.” सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, जनवरी 2019. लिंक: http://www.ijmra.us/project%20doc/2019/IJRSS_JANUARY2019/IJRSSJan19ESM.pdf

11. "दलित कविता में पार-क्षेत्रीय प्रतिरोध की खोज." मैकलेस्टर डिजिटल कॉमन्स, 2025.
लिंक: https://digitalcommons.mackalester.edu/mathcs_honors/1096
12. "लेखन प्रतिरोध की समीक्षा: हिंदी दलित साहित्य की अलंकारिक कल्पना."
लिंक: https://www.academia.edu/46757457/Review_of_Writing_Resistance_TheRhetorical_Imagination_of_Hindi_Dalit_Literature_By_Laura_R_Brueck_New_York_NY_Columbia_University_Press_2014
13. "दक्षिण एशियाई साहित्य में दलितों की आवाज."
लिंक: <https://citeseerx.ist.psu.edu/document?doi=28e38b77eb79770d5985954b5fa268340c5d736a&repid=rep1&type=pdf>
14. मलिक, विजित आदि. "हिंदी भाषा के प्रतिनिधित्व के लिए सामाजिक रूप से जागरूक पूर्वाग्रह माप.", 2021.
लिंक: <https://arxiv.org/abs/2110.07871>
15. "हिन्दी दलित कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन" (पीएच.डी. प्रस्ताव). शोधगंगोत्री , इनफ्लिबनेट.
लिंक: <https://शोधगंगोत्री.inflibnet.ac.in/bitstream/20.500.14146/4522/1/synopsis.pdf>
16. "हिंदी-दलित कवयित्रियों के काव्य का अनुशीलन" (पीएच.डी. प्रस्ताव). शोधगंगोत्री , इनफ्लिबनेट.
17. "इक्कीसवीं सदी के हिंदी और मराठी दलित कविता का तुलनात्मक अध्ययन" (पीएच.डी. प्रस्ताव). शोधगंगोत्री , इनफ्लिबनेट
लिंक: <https://शोधगंगोत्री.inflibnet.ac.in/jspui/bitstream/20.500.14146/16208/1/salve%2C%20s.%20v.%20synopsis%20c.pdf>
18. "अस्मितामूलक विमर्श से जुड़ी कविताओं की शिल्पगत विशेषताएँ" (अध्याय 5). शोधगंगोत्री , इनफ्लिबनेट. लिंक: https://शोधगंगोत्री.inflibnet.ac.in/jspui/bitstream/20.500.14146/8764/1/10_chapter-5.pdf
19. "दलित कविता," ई-बुक अध्याय. इनफ्लिबनेट.
लिंक: https://ebooks.inflibnet.ac.in/hin/p12/chapter/%E0%A4%A6%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE/Inflibnet_E-Books
20. टेलटुंबदे, आनन्द. दलित: अतीत, वर्तमान और भविष्य (दूसरा संस्करण). रूटलेज इंडिया, 2020.
लिंक: <https://www.taylorfrancis.com/books/mono/10.4324/9781003030300/dalits-anand-teltumbde-taylorfrancis.com>